RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-06
June -2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

राष्ट्रीय चेतना में रामधारी सिंह दिनकर का योगदान

डॉ0 इन्दु कुमारी

हिन्दी विभाग, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

इस कालखण्ड में राष्ट्रीय चेतना के सबसे सशक्त कवि रामधारी सिंह दिनकर (1908–1947) है। इनका जन्म सिमरिया तत्कालीन जिला–मुंगेर सम्प्रति बेगुसराय (बिहार) में हुआ था। पटना कॉलेज से इन्होंने बी.ए. इतिहास तक शिक्षा प्राप्त की। ये क्रमशः एक हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक (1935), बिहार सरकार के अधीन सब रजिस्ट्रार (1942) बिहार सरकार के प्रचार विभाग के उपनिदेशक एवं एल.एस. कॉलेज मुजफ्फरपुर (बिहार) में प्राध्यापक स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष (1955) बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, राज्यसभा के सदस्य, भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार (1965) रहे। दिनकर में संवेदना और विचार कर बड़ा सुन्दर समन्वय दिखायी पड़ता है। चाहे व्यक्तिगत कविताएँ सभी कवि की संवेदना से स्पन्दित है।

कर पाता यदि मुक्त हृदय को
मस्तक के शासन से
उत्तर पकड़ता बांह दलित की
मंत्री के आसन से
स्थात् सुयोधन भीत उठाता
पग कुछ और संभल के
भारत भूमि पड़ती नस्थात्
संगर ने आगे चल के।

फिरंगियों को भगाने के लिए भारतवासियों को अपनी शक्ति का पहचान कवि करता है :–

''मना कुछ नहीं अनल कण हो मगर
अनुकूल हवा लेकिन पाकर
छप्पर तक जा सकती उ़कर
अम्बर में आग लगा सकती
प्रचण्ड ज्वाला फैली सकती
एक छोटी–सी चिनगारी भी।।
खर खमभ ठोकता है जबर नर
पर्वत के जाते पॉव उखड़
मानव तब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है।''

इन्होंने जीवन के कई महत्त्व उपाधियों एवं पदों को हासिल किया। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र ने इन्हें पद्मभूषण की उपाधि 1959 में दी। भागलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डी. लिट की उपाधि प्रदान की। कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी, रेणुका, हुंकार, रसवती, उर्वशी इनके काव्य ग्रंथ है। अर्ध नारीश्वर, हमारी सांस्कृतिक एकता, राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय एकता, संस्कृति के चार अध्याय, वेणुवन आदि गद्य रचनाएँ है। उर्वशी (प्रबन्ध काव्य) पर इन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ प्राप्त हुआ। इस महाकवि का स्वर्गवास 24 अप्रैल 1974 की अर्द्धरात्रि में हृदय गति रूक जाने से हो गया।

दिनकर के संबंध में भगवतीचरण वर्मा लिखते है– ''जैसे पंतजी को देखते ही कोमलता और संयमता का प्रभाव उत्पन्न होता है वैसे ही निराला और दिनकर के दर्शन मात्र से पौरूष और प्रभुत्व की याद आती है। वस्तुतः संवेदनशील मना होने के कारण ही युगीन त्रासदी ने इन्हें झकझोर कर रख दिया और श्रृंगार के पार्श्व में पड़ा बीर–भाव राष्ट्रभाव बनकर फूंफकार उठा :– मेरे विशाल (हिमालय) शीर्षक कविता में कवि लिखता है :–

साकार दिव्य गौरव विराट्
पौरूष के पूंजीभूत ज्वाल
मेरी जननी के हिम–किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल।
ले अंगड़ाई उठ, हिले धरा।
कर निज विराट स्वर में निनाद।
तू शैल राज, हुंकार भरे।
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद।
तु मौण त्याग कर सिंहनाद
रे तपि, आज तक काम काल
नव युग, शंख ध्वनि जगा रहीं
तू जाग, जाग मेरे विशाल।
मेरे जननी के हिम–किरीट
मेरे भारत के दिव्य भाल
नव युग–शंख ध्वनि जगा रही।
जागो नगपति, जागो विशाल।

भारतवर्ष को लगाते हुए कवि स्पष्ट उद्घोषण करता है :–

दो आदेश, फूंक हूं श्रंगी
उदे प्रभाती राग महान
तीनों काल ध्वनित हो स्वर में
जागों सुप्त भारत भुवन के प्राण।

आजादी के लिए संघर्ष में आनेवाली कठिनाइयों से सचेत करते हुए कवि का कहना है :–

पथ क्या पथिक कुशलता क्या

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जब विधते पथ में शुल न हो,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धारा ही प्रतिकूल न हों।

स्वतंत्रता संघर्ष में शहीदों को नमन करते हुए कवि कहता है :–

कलम आज उनकी जय बोल
जला अस्थियां वाली वारी
छिटकाई जिससे चिनगारी
चढ़ गए सुली पर बिना गर्दन का कोल किये।
कलम आज उनकी जय बोल।

कुरूक्षेत्र के सप्तम सर्ग में दिनकर गांधीजी के नेतृत्व एवं आशावादिता से भारत जय की स्पष्ट उद्घोषणा करते है :–

जय हो अद्य के गहन गर्त में गिरे हुए मानव की,
मनु के सरल, अबोध पुत्र की पुरूष ज्योति–सम्भव की।
हार मान हो गयी न जिसकी किरण तिमिर की दासी
न्योछावर उस एक पुरूष पर कोटि–कोटि संयासी।

स्मवेततः हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना के स्वर भारतेन्दु युग से प्रारंभ होकर द्विवेदी युग छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से होते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के काल सन् 1947 तक पहुंचती है। यह चेतना हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के साथ निरंतर नये संदर्भों में जटिलऔर गहरी होती गई है। अपना विकास करती गयी। मैथिलीशरण, सियारामशरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर जैसे समर्थ कवि प्रबन्ध काव्यों के रूप में सशक्त रचनाएँ प्रस्तुत करते है वही कुछ प्रबन्ध काव्यों के रूप में सशक्त रचनाएँ प्रस्तुत करते है वही कुछ कवि छोटी–छोटी पुस्तकों और मुक्तकों में अपनी राष्ट्रीय चेतना के स्वर मुखरित करते है। कहना न होगा कि इनकी उपलब्धि स्मरणीय और अक्षुण्ण है, क्योंकि भावना के स्तर पर मानव–प्रकृति और प्रवृत्ति को राष्ट्र के लिए समर्पित के राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न कवियों ने इस कार्य को बड़ी ईमानदारी और समर्पण के साथ किया है। अतएव इनके योगदान ऐतिहासिक कर्त्तव्य मानते जा सकते है :–

न झुकेंगे न रूकेंगे हम
चाहे आये लाख तूफान
भारत माँ की खातिर हम
न्योछावर कर देंगे प्राण
भारत एक स्वप्न, भू को ऊपर ले जानेवाला
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लानेवाला।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. विद्याधर महाजन : आधुनिक भारत, पृ. 536।
2. कूपलैण्ड : आधुनिक भारत का इतिहास, पृ. 128।
3. ताराचन्द : हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इण्डिया, पृ. 48।
4. झारखण्ड चौबे : इतिहास दर्शन, पृ. 40।
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका, पृ. 08।
6. रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 29।
7. हरिशचन्द्र वर्मा : मध्यकालीन भारत, भाग–2, पृ. 581।

RRIJM 2015, All Rights Reserved